स्टेट लेवल कॉन्फ्रेंस मेडिकल अपडेट में एक्सपर्ट्स ने किया विचार-विमर्श

बीपी की दवाओं का असर हो रहा खत्म, 19 फीसदी मरीजों में रेजिस्टेंट हाइपरटेंशन की शिकायत

जयपुर। हाइपरटेंशन के मरीजों में भी एक ऐसा वर्ग तेजी से बढ़ रहा है, जिनमें इस बीमारी की कोई दवा असर नहीं कर रही है। ऐसे में इन मरीजों को हार्ट अटैक, ब्रेन स्ट्रोक जैसे जावलेवा खतरे कहीं अधिक बढ़ गए हैं। हाई ब्लड प्रेशर की 3 या उससे अधिक दवाएं लेने के बावजूद यदि रक्तचाप नियंत्रित नहीं हो रहा है तो इसे रेजिस्टेंट हाइपरटेंशन कहा जाता है। जयपुर में आयोजित एक दिवसीय स्टेट लेवल कॉन्फ्रेंस मेडिकल अपडेट 2026 में विशेषज्ञों ने कुछ ऐसे ही विषयों पर जानकारी दी।

ऑर्गनाइजिंग चेयरपर्सन डॉ. संजीव के. शर्मा ने बताया कि इस कॉन्फ्रेंस में कोई एक स्पेशियलिटी पर फोकस न करके अलग-अलग स्पेशिलियटीज में बीमारियों के इलाज पर आ रही नवीनतम जानकारी साझा की। इसमें कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी और एंडोक्राइनोलॉजी के अलग-अलग विषयों परपर विशेषज्ञों ने जानकारियां साझा की। इटर्नल हॉस्पिटल की को-चेयरपर्सन मंजू शर्मा और सीईओ डॉ प्राचीश प्रकाश ने बताया कि इस तरह की कॉन्फ्रेंस से न केवल विशेषज्ञों को नवीनतम जानकारी उपलब्ध होती है बल्कि उन्हें दूसरी स्पेशलिटी के संबंध में भी अपडेट मिलता है।

इन विषयों पर हुई चर्चा

इस दौरान न्यूरोलॉजी में एक्यूट इस्कीमिक स्ट्रोक के वर्तमान उपचार और मरीज के प्रबंधन के दौरान क्या करना चाहिए और किन बातों से बचना चाहिए, इस पर चर्चा हुई। गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में फैटी लिवर रोग के उपचार में हुए बदलाव, प्रभावी उपचार विकल्प और भविष्य की संभावनाओं पर विशेषज्ञों ने विचार साझा किए। नेफ्रोलॉजी में रेजिस्टेंट हाइपरटेंशन में किडनी से जुड़े कारणों की पहचान कब करनी चाहिए, इस पर चर्चा हुई। इसके साथ नेफ्रोलॉजी में फिजिशियन के दृष्टिकोण से विभिन्न उपचार पहलुओं पर पैनल चर्चा हुई। कार्डियोलॉजी में हालिया प्रगति और लीडलेस पेसिंग को भविष्य की उपचार पद्धति के रूप में चर्चा का प्रमुख विषय था। विशेषज्ञों ने बदलती उपचार तकनीकों और उनके व्यावहारिक उपयोग पर विचार रखे। वहीं एंडोक्राइनोलॉजी में हाइपोग्लाइसीमिया को केवल ग्लूकोज के स्तर के बजाय उसके मरीज पर पड़ने वाले चिकित्सकीय प्रभाव के आधार पर समझने पर जोर दिया गया।

रेजिस्टेंट हाइपरटेंशन की वजहः दवा में लापरवाही

डॉ. संजीव शर्मा ने बताया कि कुछ मरीज नियमित रूप से दवाएं नहीं लेते, कुछ बिना डॉक्टर की सलाह के बार-बार ब्रांड या डोज बदलते हैं। यह आदत धीरे-धीरे रेजिस्टेंट हाइपरटेंशन की ओर ले जाती है। इस स्थिति में हार्ट की अंदरूनी संरचना पर असर पड़ता है, वाल्व डैमेज हो सकते हैं और मरीज की जान पर जोखिम बढ़ जाता है। अगर बीपी लंबे समय तक नियंत्रण में नहीं आ रहा है तो उसके लिए नई तकनीक रीनल डिनिर्वेशन आ गई है जिसमें किडनी के पास से गुजर रही नर्व, जो बीपी को नियंत्रित करती हैं, उन्हें ब्लॉक कर दिया जाता है। इस नई थेरेपी के काफी अच्छे परिणाम हैं।

Dr. Sanjeev K Sharma
MD, DM (Cardiology), M.B.B.S, FACC, FSCAI, FESC
Chairman Interventional Cardiology
Eternal Hospital (EHCC), Jawahar Circle, Jaipur